

निमदयः शानिनीधनधायिनी पद्मनी पद्मधनी च पद्मासासनमासनी ॥ शुद्धनृपीमहाः
कुरु हनवेहैककयी ॥ चिकामलिधनी ददी शुद्धयुक्तकथाविमो ॥ निधानकुरुमाचरो
धन्याभात्र धनेयिया ॥ देवाहुकमहा आदी दिवा रुत्रहरविषी ॥ साकनीसर्ववृक्षा नं वने २
साकनीसर्ववृक्षा नं वने ॥ शुद्धमाकावनी ददी सावाकावविवेकिनी ॥ वेद्ययकिविनकात्र दीपिनी ॥
साकनीसर्ववृक्षा नं वने ॥ सकपालावका रुमी ॥ वाक्कलीवद सावा शुद्धमाकाव

कसुखावनी ॥ २८ ॥ शुद्धि
ककं वृक्षसाविगंसमाकाव ॥ वा
उं नमशी वृक्षविदाव (धोः) ॥
रुगवान वृक्षविहत्रमिस्मा ॥
रुकाधरुयं वृक्षसापदासावः

शीवसुधावा नामाक्षरुत्रम
यधमाहुरु ५ ॥ २९ ॥
नुवर्माया शुद्धमकस्मिन्मथ
सर्वगनीवं वृक्षमधिष्ठायाव
कस्मा ॥ शुद्धयं शुद्धयं दूरस्मि

ॐ

हृदि स्थितं वसुविष्णुविवा दपुनित्यं समं नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
यस्य कं वा जानु वा नयितुं व्यामहासोऽस्मात्पुनरुवेति ॥ वाङ्मनसोऽप्यसादरविष्णुति ॥ पुनर्ध्या
उ रविष्णुति न वासुदेवस्य विष्णुत्वं ज्ञात्वा न प्रयुक्तीत्युक्तं ॥ वाङ्मनसोऽप्यसादरविष्णुति ॥ पुनर्ध्या
वासुदेवस्य विष्णुत्वं ज्ञात्वा न प्रयुक्तीत्युक्तं ॥ वाङ्मनसोऽप्यसादरविष्णुति ॥ पुनर्ध्या
रुगवान्नाहं नमो वरुणकवः ॥ सुच वाधिसत्त्वा महासत्त्वा सा च सर्वो वर्गी पर्वत्त दवसा

नृणां सत्त्वाकारुगवत्तासापि
यगेतपतिरुदयोनामध्वजः
ॐ नमोऽसीवद्वाय ॥ ॐ नमोऽसीवद्वाय ॥
ॐ नमोऽसीवद्वाय ॥ ॐ नमोऽसीवद्वाय ॥
ममकावसासहृदयगतिगः

नमस्तु नन्दनिधि ॥ ॐ नमोऽसीवद्वाय ॥
धीमहि ॥ ॐ नमोऽसीवद्वाय ॥
गवसि सर्वे साययुनिविधि
ॐ नमोऽसीवद्वाय ॥ ॐ नमोऽसीवद्वाय ॥
गतस्वरावविष्णुर्दुःखोपाय

उत्तरं विष्णुं प्रविष्टं विष्णुं मांसं सर्वं तथा गताः समगताः वचनं वचनं नाम तारिष्यते ममात्मनामः
तुम्हारे आर्द्रा हरे देव आर्यसंघे प्रविष्टा धर्म्ये विष्णुधर्म्ये रगगदी स्वभावविष्णुं उद्धृष्टः
विष्णुं प्रविष्टं ॥ सहस्रं त्रिसं अदि न सर्वं तथा गता वना किं निषेधा त्रिसं यत्रिष्ट १०
प्रति सर्वं तथा गता मां द गता मियुक्तिष्ठि न । सर्वं तथा गता दया धिष्टाना धिष्टि न स्वाहा
॥ उं म उं २ महाम उं व ऊ काय सं ह न प्रविष्टं सर्वं कर्मा वन विष्टं यति निवर्तनाः

माना तान् धर्मं धर्मं समा क ॥ ० ॥ अधर्मा ॥ ० ॥ ॥ उं न मा र ग व ले आर्ये पुष्पा पात्र
मे नाथे ॥ उदमा या यु न म क सि त्त म थ रु ग वां जा उ र ह वि ह न ति स्म ॥ उं कू ट प र्व क म
द गारि क सं ध न सा र्द्ध म रु गा व द धि स त्व सं ध न न ख लू य नः स म थ न रु ग वां ग डी याः
यो ज व रा धे ना म स मा धि स मा य न १ क सि त्त म थ आ र्यो व सा कि न्ध या वा धि स त्वा म दा मः
त्वा ग म्भी जा यां पुष्पा पात्र मि ना यां च या म व द व सा कि य ति स्म ॥ यं व र्क थान स्व रा व ग्गु न्यां

ॐ
क

॥ ह्रीं नमः श्री मायी चै ॥
स ग वान्ना व ह्यां विरुज नि स
म ह गारि क संध त सा ह म ह क
म हा ए व के वा धि स त्वे म हा स त्वे
य क सा ॥ अ ह्नि रि क वा मा नी चै

न व सा या रु क म क सि न स म यः
॥ ऊ र व न अ ना थ पि उ सा चाम
या द ग रि रि क ग केः स व क ले य ॥ १४
॥ क रु व ल रु ग वा न रि क ना म रु
ना म द व ता सा स य च नु म सा ह

त्रा दि त्वा सा भां भा ज व रु व रु ह्नि रि क ग नि य न ना रु क रु रि व रु विं ग रि त रु जा द रि त्वा य
सा ना म हा व रु स म गालं का न व रु हा धि ष्ठा ना धि रि क सिं हा स न वि रु ज नि स ॥ अ न के वा नि स
व रु ॥ ह रु से सा ह ॥ म य था ॥ व रु पा दि ना च वा धि स त्वे न म हा स त्वे ना ॥ व रु च लु ना च वा
धि स त्वे न म हा स त्वे ना ॥ व रु व ल ना च वा धि स त्वे न म हा स त्वे ना ॥ व रु स न ना च वा धि स त्वे न म
हा स त्वे ना ॥ व रु वि ना य क ना च वा धि स त्वे न म हा स त्वे ना ॥ व रु वा प रु रु ना च वा धि स त्वे न न

शं

हासत्वन॥ वज्रविक्रमिन् न च वाधिसत्वनमहासत्वन॥ वज्राधिप न च वाधिसत्वनमहासः
सत्वन॥ वज्रात्मकाल न च वाधिसत्वनमहासत्वन॥ वज्रविक्रम न च वाधिसत्वनमहासत्वन
॥ अथ किं वज्र न च वाधिसत्वनमहासत्वन॥ अथ वसाकिं न च वाधिसत्वनमहासत्वन॥
मनकुरुड न च वाधिसत्वनमहासत्वन॥ समका वसाकिं न च वाधिसत्वनमहासत्वन
न॥ साकाराया ना व वाधिसत्वनमहासत्वन॥ यमकुरु न च वाधिसत्वनमहासत्वन॥ अतः

पड वाय कूर्चोक्ते॥ कषाचिडा जहा वाय कूर्चोक्ते कषाचिदुवमपह जकि॥ कषाचिदोयोय
कानो सत्वनाना मत्वा य कूर्चोक्ते॥ उवत्सर्व सत्वा नृपड वन वाहय कि॥ मेई गयड मरुग वा
नो योय वाधिसत्वनमहापड वसा रुविष्य कि॥ ॥ रुगवानाहा साधु साधु वरुग
यहो ह सत्वनाना मत्वा य हिताय सखाय रुपावित मत्वा य महा युक्त मित युक्त मत्वा य गक
हो ह सत्वनाना मत्वा य हिताय सखाय रुपावित मत्वा य महा युक्त मित युक्त मत्वा य गक

५
५

उद्यन्वासां कृत्वा किरीष नमस्त्वानां शुक्रातिशुक्र नदी दिव्यपूजा मर्धकर जायकर यथा नृक समावः
 तुरेद नमस्त्वेषां यथा नृक किरीष हापूजितापतिपूयक निदेहक यमानिहाद वाप्येस वायेवः
 किनेवा यमहा नमस्त्वेषां यथा नृक सायेव मानूषायेव मानूषा सम यकिचक्रा यमहा नः
 यरु नृक सायूपा यथा यव यमि मरुता यपियथा कुमं ॥ ॥ अथ खसूग वाङ्मय मनि
 सृष्टा गता रेहः सम्यक् वृद्धा खदु दया कनूमा विविठिकः नाम वसिजा तं निशार्थ गहा साभू

अथ वगं यमिस्मा अथ नृक कनू द वगं सर्वे यहा आदिहा दयात् यरु गवकं गव मनि रुथा ग
 कनू कनू सम्यक् वृद्धः सर्वो रिदि वपूजा रिः पूद यित्वा यमम जान नि नियत्य रुता जहा निपूः
 ठा रुता रुग वकं मगद वाचक ॥ अन्गुही ता वयं रुग वता कथा गतं नाह के सम्यक् वृद्ध न कद
 गय रुग वान का दृगं यमि यथा यमगी रुक सम्यक् वृद्धा कनू मः शुपिं यत्रिशा नः
 यत्रि अरु यत्रि यो वगं गतिं खसू यतं दलु यत्रि हा नं गलु यत्रि हा नं विषदू षमं विष ना म नं गीः

मावंप्रजसीवन्धकूरुयामः॥ अथमाक्षमनिरुगवाकथागसाहेसंवक्ष्यहानमः॥
 पूजाकायकम्॥ ॐ मद्याकायस्वाहा॥ ॐ गोमां गवस्वाहा॥ ॐ वक्रांकुमानायस्वा
 हा॥ ॐ वक्रायस्वाहा॥ ॐ आगस्यदायस्वाहा॥ ॐ अमनाकमायस्वाहा॥ ॐ कृष्टवक्ष्यस्वा
 हा॥ ॐ अमृकप्रियायस्वाहा॥ ॐ अमिकमवनमःस्वाहा॥ ॐ मानिवक्रपावनव
 यहावाभनुहदयापठिमसिद्धानिरुवेक्रियथानः॥ ॐ कर्मवह्निदहनदिग्म

[illegible]

धनं दुर्जनं अकुरु कस्युत्तमं कुरु मयि यथावसक ॥ ॐ नमः उच्यते नमः विजया
शिवं गवतमः स्वाहा ॥ २ ॥ दक्षिणस्यादिगिरिगिरिपद्माय विचयनगवमसुतकरि
पद्मं गवतं कावाको दक्षवहनकस्युः अकुरु कस्युत्तमं ॥ ॐ नमः वक्रा
पद्मं गवतं कावाको दक्षवहनकस्युः अकुरु कस्युत्तमं ॥ ३ ॥ पश्चिमस्यादिगिरिगिरिपद्माय विचयनगवमसुतकरि
पद्मं गवतं कावाको दक्षवहनकस्युः अकुरु कस्युत्तमं ॥ ४ ॥

नमः कस्युत्तमं कावाको दक्षवहनकस्युः अकुरु कस्युत्तमं ॥ ५ ॥ सिंधु नमः मयं यथा नमः उच्यते नमः विजया
शिवं गवतमः स्वाहा ॥ ६ ॥ दक्षिणस्यादिगिरिगिरिपद्माय विचयनगवमसुतकरि
पद्मं गवतं कावाको दक्षवहनकस्युः अकुरु कस्युत्तमं ॥ ७ ॥ पश्चिमस्यादिगिरिगिरिपद्माय विचयनगवमसुतकरि
पद्मं गवतं कावाको दक्षवहनकस्युः अकुरु कस्युत्तमं ॥ ८ ॥

॥ स क स फा स म नुं उ क क सः ॥ उ वं पू जि ना स र्व श हा वि वि ध नृ पि द द द मि वि य न्ना न म म
 (गो) ला ग्नां उ य क्य पिः ॥ सा ति द ऊ या (द) न व य हा नां स लु ह दे या ति पि ठि क सि द्धा ति ह रु वा
 य था नू क र्म व पु र्ण द न गे ध म उ ल कं रु त्वा द्वा द गं उ ति प्र मा न म उ ल स ध पू र्ण जि यि क
 या तिः शं सु म त्स य नृ षा दि ला क त अ र्घ द त्वा अ क्श रु न ग न वा न य त्रि उ प्य क्ता प य्वा त्म न व
 उ या (द) य ह मा रु का ना स धा न ति म नु पा दा ति स क वा ना नू र्वा न यि क या ति ॥ न क र्म स र्वेः

वि वि द्वा न्नि द र जि च र स र्व वि द्वा न ना स न क नू स म स प नि वा न स स र्व स त्वा ना
 कृ प य र स र्व पा पा नि स प नि वा न स ग्ने र द क र द म य र द य य र उ र्द ग श्या त्म स र्वा
 वा न क र स र्व स त्वा ना क स र्व न क रु ग ह पी ठा नि वा न थ र रु ग व नि षे य क नू स क यः
 उ र्द य र स र्व कृ षा वा ग य र स र्व पा पा नि स म स प नि वा न स व द र व पु नि र उ नू र व ध र
 म र र म म मू च र रु वा ह व रु वा रु व उ य उ य क पा र य पू न य र ग रु व नि म ना यः

सर्वसुखनिदानस्य सर्वसुखानां च सर्वकथागताधिष्ठानाधिष्ठितं समयस्वाहा ॥ ३ ॥ स्वाहा ॥
 स्वाहा ॥ स्वाहा ॥ धीः स्वाहा ॥ उं आदि स्या य स्वाहा ॥ उं भा मा य स्वाहा ॥ उं अं ग ना यः
 स्वाहा ॥ उं इ ह स्य क य स्वाहा ॥ उं गु क्रा य स्वाहा ॥ उं ग नी प्र य स्वाहा ॥ उं ना र
 क म य स्वाहा ॥ उं व रु ध ना य स्वाहा ॥ उं ष म ध ना य स्वाहा ॥ उं कृ मा ना य स्वाहा ॥ उं
 रं ग ना हा क उं स र्व न क र्ण नां स्वाहा ॥ उं स र्वो प द नां स्वाहा ॥ उं द्वा द श नां नां स्वाहा ॥

॥ ३ ॥

दमवाचदृगवाचननाम वारिकु वः न च बोधिसत्त्वामदासत्वासावहर्वाव
 क्रियत्यस्य दवमानव्यास न ग न उ ग थ र्व श्रु ता को र ग व द ना ना न क स र्वाः
 नन्दनिगि ॥ ॥ आर्यो ग्राग्रहमात्रिका नाम भूमी समा य मित्रि ॥ ॥
 य ध र्मा रु क्रियता वा रु सु क्रियता य ग न रु वं द न वां च या डानि ताः
 क न व न वा दि स द्वा स द म नं ॥ ॥ स र्व न द ग र्वा मा य मित्रि मा स कृ य य

कदादस्यानिता जगदाय धाक संयुक्तमिति ॥ लिखायि नृणां व
जायार्थं ग्राहनि गत्रवा हानया कर्मणा न विद्या रथा ॥ १२ ॥

२०

आज का काथि

1.497

ASHA ARCHIVES